नारी तू है भाग्यविधाता

-ब्र.कु.प्रीति

व्यक्ति-निर्माण से लेकर विश्व-निर्माण तक महिलाओं के महत्व और भूमिका को हम सभी अच्छी तरह से जानते हैं। परिवार, जो कि समाज की सबसे बड़ी ईकाई है, चाहे संयुक्त हो या एकाकी, उसकी जीवन पद्धति तथा सामाजिक व्यवहार उस परिवार की प्रमुख महिला के संस्कारों से प्रतिबिम्बित होते हैं। परिवार के हर सदस्य के संस्कारों को परिष्कृत करने की प्रत्यक्ष या परोक्ष ज़िम्मेवारी उसी पर होती है। इतिहास साक्षी है कि विश्व के महान्-से-महान् चरित्रों चाहे महाराजा शिवाजी हों या लाल बहादुर शास्त्री, महात्मा गांधी हों या लाला लाजपत राय, इन सभी को गढ़ने में माताओं (महिलाओं) का ही सबसे बड़ा हाथ रहा है। नारी सेवा,ममता, कल्याण, त्याग और उच्च मूल्यों की सजीव प्रतिमा है। वर्तमान दौर में उसके जीवन को यदि ध्यान साधना और अभ्यास का सम्बल देकर विकसित और परिष्कृत कर दिया जाए तो उसके स्नेह, संग में विनयशील, निःस्वार्थी, कर्तव्यनिष्ठ और विशाल दृष्टिकोण वाले उदारमना व्यक्ति निर्मित हो सकते हैं। आज इसी की आवश्यकता है। इसके लिए नारी का आध्यात्मिक और नैतिक सशक्तिकरण चाहिए। आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक सशक्तिकरण तो नैतिक सशक्तिकरण की परछाई मात्र है।

सदियों से शोषित नारी के लिए सशक्तिकरण एक प्रकार से घाव पर लगाई जाने वाली मलहम है परन्तु मलहम तभी काम करती है जब पहले घाव को पोंछ दिया जाए। नारी के प्रति 'अबला','भोग्या', और 'दूसरे दर्जे की' इस प्रकार का दृष्टिकोण और धर्मशास्त्रों में उसको अपमानित करने वाले, निन्दा सूचक तथा अन्यायकारी शब्द और वाक्य उदाहरण के लिए उसे नरक का द्वार कहना उसके साथ घोर अन्याय ही तो है जबकि नर-नारी दोनों मिल कर ही नरक का द्वार बनते हैं। पुरानी मान्यताओं के साथ-साथ वर्तमान काल की भैतिकवादी आँख ने भी नारी के ईश्वरीय गुणों को पहचानने के बजाए उसे विज्ञापन का साधन तथा उसकी शारीरिक सुन्दरता को निम्न स्तर की कमाई का साधन बना दिया है। उसका स्थान-स्थान पर शारीरिक शोषण होता है और वह स्वयं भी अपनी अस्मिता को भूल, पुरुष के कामी हथकण्डों का शिकार होकर वासना की वस्तु बन गई है। पुनश्च, बहुत दिनों से दबी हुई नारी-वृत्ति स्वतन्त्रता के परिणामस्वरूप, स्वच्छ समाज के स्थान पर एक स्वच्छन्द समाज का वातावरण बनने लगा है। सरकारी कानूनों ने भी वासनात्मक भाव-भंगिमाओं की, कला के नाम पर स्वीकृति देकर आग में घी का काम किया जैसे फ्रायड ने कहा कि - मनुष्य हर कार्य काम-प्रेरित होकर करता है - इससे नारी देह के प्रति पूज्या के स्थान पर भोग्या का गलत दृष्टिकोण समग्र रूप से पनपने लगा है। कई मनोवैज्ञानिकों, लेखकों, चिन्तकों ने पूर्वाग्रहों से ग्रसित होकर नारी को शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक स्तरों पर पुरुष की भेंट में निम्न स्तर की भ्रान्त-धारणाओं के रूप में प्रचलित किया जिसके कारण समाज ने सचमुच ही उसे निम्न दर्जे की और दूसरे दर्जे की घोषित कर दिया। जब तक मान्यताएँ नहीं बदलती तब तक दृष्टिकोण नहीं बदलता और जब तक दृष्टिकोण नहीं बदलता तब तक सशक्तिकरण हो नहीं सकता।

हमें यह बताते हुए गौरव का अनुभव हो रहा है कि महिला सशक्तिकरण का कार्य प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय पिछले 78 वर्षों से बड़े प्रभावी ढंग से कर रहा है। इस संस्थान का मानना है कि नर और नारी, गृहस्थ रूपी रथ के दो पहिये हैं, अतः यदि दोनों ही दिव्यता और योग के मार्ग को अपनाएँ तो अति उत्तम होगा। दोनों एक-दूसरे के सहयोगी तो हों, पर उनमें खींचतान न हो। पारस्परिक अगाध आत्मिक स्नेह और सम्मान भवना तो हो पर आसुरी वृत्तियों का, शोषण का और एक दूसरे के प्रति वासना का स्थान न हो। आध्यात्मिक शिक्षा के द्वारा इस विद्यालय द्वारा किया जाने वाला नारी और नर की बराबरी का यह कार्य देखने योग्य है। इसका उद्देश्य, ठीक सामाजिक मूल्यों की स्थापना करना है, जिससे नारी श्री लक्ष्मी के समान और नर श्री नारायण के समान स्तर को प्राप्त करें।

नारी अबला है या सबला?

बहुत पुराने ज़माने से पुरुष यह कहता चला आ रहा है कि नारी शारीरिक तौर पर 'दुर्बल' अथवा 'अबला' होती है। यह भी कहा जाता रहा है कि 'नारी की बुद्धि उसके बायें पांव की एड़ी में होती है' अर्थात् उसमें सोचने समझने और निर्णय करने की शक्ति नहीं होती। अब तक शिक्षित लोगों में भी यह विश्वास चला आ रहा है कि बौद्धिक विकास के दृष्टिकोण से भी नारी पुरुष के समतल पर नहीं उतरती। नारी के विरुद्ध यह भी एक आरोप लगाया जाता है कि वह पुरुष की अपेक्षा अधिक भावुक तथा वासना प्रधान होती है। परन्तु आधुनिक शरीर-विज्ञान और मनोविज्ञान द्वारा तथा प्रत्यक्ष उदाहरणों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि नारी के विषय में हज़ारों वर्षों से चली आ रही उपरोक्त चारों प्रकार की (शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक तथा चारित्रिक) मान्यताएँ निराधार हैं और सरासर गलत हैं।

प्रत्यक्ष उदाहरण

वैज्ञानिकों में नोबल पुरस्कार विजेता मैडम क्यूरी को स्थान प्राप्त है। वह भी किसी प्रकार से पुरुषों के काम से कम महत्व का नहीं है। उन्होंने रेडियम को पहली बार उपलब्ध किया था। यूरेनियम-238 का पहले जिस महिला ने अत्यन्त महत्वपूर्ण अविष्कार किया - श्रीमती लाईज मटनर उनका भी विज्ञान में बहुत उच्च स्थान है। इनके अतिरिक्त आइरीन क्यूरी का तथा शरीर-विज्ञान और चिकित्सा शास्त्र में नोबल पुरस्कार विजेता गर्टी कोरी का स्थान भी सर्वोच्च कोटि के वैज्ञानिकों में गिना जाता है। जहाँ तक साहित्यकारों की बात है, पर्ल बक, गेबरियला मिस्ट्राल, ग्रेजिया डेलेड्डा, सिग्रड, सेल्मा इत्यादि महिलाओं ने भी साहित्य में नोबल पुरस्कार पाया है। कलाकारों में ज्योर्जिया ओ' कीफ भी महान कलाकार मानी गई हैं। संगीतकारों में मइरा हेस्स, और वान्दा लेन्डोवस्का की संगीत कला किसी से कम नहीं है। भारत में भी लता मंगेशकर, एम. सुब्बुलक्ष्मी इत्यादि उच्च कोटि की गायिका तथा नर्तकी मानी गई हैं। दर्शन एवं अध्यात्म के क्षेत्र में जहाँ 'आदि शंकराचार्य' का नाम आता है वहाँ उससे शास्त्रार्थ करने वाली, मण्डल मिश्र की धर्म-पत्नी भारती का नाम भी नहीं भुलाया जा सकता, न ही संत कवियों में सूरदास के महत्व के सामने मीरा के महत्व को विस्मृत किया जा सकता है। शासन-कार्य में भी इंग्लैंड की महारानी एलिज़ाबेथ प्रथम तथा एलिज़ाबेथ द्वितीय बहुत ही जन-प्रिय एवं प्रतिभाशाली मानी गई हैं। इनके अतिरिक्त, नीदरलैंड की महारानी जूलियना और इंग्लैंड की महारानी विक्टोरिया की इतिहास पर काफी छाप पड़ी है। इधर भारत में भी पूर्व में श्रीमती इन्दिरा गांधी, इज़राईल में श्रीमती गोल्डा मीयर तथा श्रीलंका में श्रीमती भण्डारनायके ने काफी ख्याति पाई है। अतः अब तक पुरुष यह जो आक्षेप नारी पर लागते आये हैं कि नारी शारीरिक तथा बौद्धिक दृष्टि से या साहसिक तौर पर कमज़ोर है, व्यावहारिक रूप से ग़लत सिद्ध हो चुके हैं। आज हम देखते हैं कि महिलाएँ वकील, डॉक्टर, प्रोफेसर, वैज्ञानिक, मजिस्ट्रेट, पुलिस अधिकारी इत्यादि के रूप में पुरुष की भाँति ही कार्य कर रही हैं। अभी कुछ वर्ष पूर्व ही जापान की महिला ने संसार के सबसे ऊंचे पर्वत-शिखर-माउण्ट एवरेस्ट पर पहुँच कर यह सिद्ध कर दिया है कि साहस और सहनशीलता में और कठिनाइयों और विषम परिस्थितियों का सामना करने में भी नारियां, पुरुषों की अपेक्षा दुर्बल नहीं हैं। महिलाओं ने अन्तरिक्ष यात्रियों के तौर पर चाँद पर जाकर तथा बौद्धिक कुशलता-सम्बंधी कार्यों में भी भाग लेकर सिद्ध कर दिया है कि वे पुरुषों से किसी भी तरह हीन नहीं हैं। इन सब बातों पर विचार करते हुए कहना होगा कि नारी अबला नहीं है परन्तु सबला है।

नारी द्वारा स्वर्ग का द्वार खोला जा रहा है

इस प्रकार हम देखते हैं कि बीज रूप में नारियों में अनेकानेक ऐसी दिव्यताएँ, शक्तियाँ अथवा योग्यताएँ हैं जिन्हें सींचने से वह आध्यात्मिक शक्ति एवं दिव्य गुणों से इतनी महान् बन सकती हैं कि सारे जगत को पलट कर रख सकती हैं। परन्तु इस कार्य को कोई भी मनुष्य नहीं कर सका; उसके लिए यह कार्य सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक रूप में सम्भव था भी नहीं, क्योंकि वह तो नारी को 'नरक का द्वार' मानता रहा; उसे माया का रूप अथवा सर्पिणी बताता रहा तथा नारी को ईश्वरीय ज्ञान का अध्ययन भी निषिद्ध बताता रहा। अतः परमपिता परमात्मा शिव जिन्हें 'अर्धनारीश्वर' भी कहा गया है और 'माता एवं पिता' भी, उन्होंने यह कार्य किया है। उन्होंने 'प्रजापिता ब्रह्मा' के माध्यम से कन्याओं-माताओं को सहज रीति से ईश्वरीय ज्ञान, राजयोग तथा दिव्य गुणों की शिक्षा देकर शक्तिरूपा बना दिया है। अब यह अहिंसक शिव-शक्ति सेना, यह श्वेत-वस्त्र धारिणी ब्रह्माकुमारीयाँ ही नर-नारी में समान रूप से मनो-परिवर्तन लाकर, उनके संस्कारों को पवित्र बना कर सतयुग की स्थापना कर रही हैं। दूसरे शब्दों में 'नारी नरक का द्वार है' वे इस उक्ति को ग़लत सिद्ध करती हुई स्वर्ग का द्वार खोल रही हैं। प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या आवश्यकता है? इसलिए आज भी आगंतुक ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय में आकर स्वर्ग का अनुभव करते हैं।

सुषुप्त शक्तियों को जागृत करें

आज के ज़माने में परिवार की ज़िम्मेवारी उठाना तो ज़रूरी है ही लेकिन साथ-साथ यह भी ज़रूरी है कि हम आध्यात्मिक रूप से सशक्त हों। हमें परिवार की ज़िम्मेवारी को छोड़ना नहीं है लेकिन आध्यात्मिकता के लिए समय ज़रूर निकालना है। बैलेन्स रखो, शरीर भी देखो और आत्मा की भी उन्नति करो। इस ईश्वरीय शक्ति से हमारे भीतर बहुत हिम्मत आ जाती है और हर परिस्थिति से सामना करने की ताकत आ जाती है। महिलाएं अपनी दृढ़ता की शक्ति से बहुत आगे बढ़ सकती हैं, अपनी सुषुप्त शक्तियों को जागृत करके, शिव शक्ति जो उन्हीं के शक्ति स्वरूप का गायन है उसे सार्थक कर सकती हैं। अभी ज़रूरी है कि हम अपना जीवन अपने हाथ में लेकर और अपने परिवार को भी मार्गदर्शन देकर उन्हें भी आध्यात्मिकता की राह पर अग्रसर करें। इसके लिए आपको घरबार छोड़ कर सन्यासी बनने की आवश्यकता नहीं बल्कि आप अपने घर को ही आश्रम बना सकते हैं।

-ब्र.कु. डॉ. निर्मला, निदेशक ज्ञानसरोवर, माउण्ट आबू

शिव शक्ति-स्वरूपा है नारियाँ

नारियां स्वयं में ही शिव शक्ति स्वरूपा हैं। सिर्फ उन्हें अपनी शक्तियों को पहचानना है। रशिया में भाषाएं भिन्न होते हुए, संस्कृति भिन्न होते हुए भी हमने पिछले एक दशक से फैमिली वैल्यूज़ के प्रोजेक्ट के अंतर्गत अष्टभुजाधारी दुर्गा के चित्र को रखकर वैल्यूज़ के बारे में महिलाओं को जागृत किया और उनमें यह अहसास जागृत भी हुआ कि हमारे अंदर ही यह शक्तियां हैं और हमें ही पुनः देवी-देवता जैसा बनना है। और उसके लिए परमात्मा के साथ अपना नाता जोड़कर बल प्राप्त करना है। आज हज़ारों महिलाएं इसमें जुड़ गई हैं और पूर्णतः परमात्मा के निर्देश और उनकी शिक्षाओं का अनुसरण कर पवित्रता के मार्ग पर अग्रसर हैं। उनके जीवन में आए चमत्कारिक बदलाव से उन्हें निश्चय हुआ कि यह परमात्मा का ही कार्य है और वो सदा ही हमें शक्ति प्रदान कर रहा है। तो महिला दिवस के उपलक्ष्य में मेरी यही शुभकामना है कि अपने जीवन को पर्पज़फुल बनाएं और अपने को सबल बनाएं।

- ब्र.कु. सन्तोष, राजयोग शिक्षिका, सेंट पीटर्सबर्ग रशिया।